आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : दसवां | फरवरी-2016

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

5 अवगुण

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

7 सतगुरु सबका पालनहार है

गुरु नानकदेव व गुरु अंगददेव जी की बानी (16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

परम सन्त महाराज कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

17 इच्छाएं

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को संदेश

27 विदाई संदेश

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-096 67 23 33 04, 099 28 92 53 04

अनुवादकः मास्टर प्रताप सिंह शाक्य उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह व जस्सी

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2016 –167– मूल्य – पाँच रुपये

महाराज कृपाल के पवित्र जन्मदिवस पर सारी संगत को लाख-लाख बधाई

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अवगुण

अगर हमें यह बात समझ आ जाए कि मृत्यु अटल है तो हमारे जीवन में बहुत बदलाव आ सकता है। आपको अभ्यास में हमेशा सतर्क रहना चाहिए अगर हम ऐसा नहीं करते तो हमारा मन दूसरे लोगों के बारे में सोचने लग जाता है, उनके काम की आलोचना, निन्दा करने लगता है।

हम दूसरों के अच्छे गुणों को अपनाने की जगह उनके **अवगुण** अपनाते हैं अगर आप दूसरों के अवगुण देखेंगे तो आपमें भी वे अवगुण आ जाएंगे क्योंकि आप जैसा सोचते हैं आप वैसे बनेंगे।

परमात्मा कहता है, ''मेरा सबसे अच्छा बच्चा वही है जिसे मैं दूसरों में नज़र आता हूँ।'' विचार बहुत प्रबल होते हैं, आपको दूसरों के **अवगुण** देखने की बजाय उनके नेक गुण देखने चाहिए। आपका बोल मीठा होना चाहिए जिससे दूसरों की भावनाओं को चोट न पहुँचे। किसी की भावनाओं को चोट पहुँचाना घोर पाप है। आप परमात्मा से तो प्यार करना चाहते हैं फिर भी आप दूसरों को कोसते हैं जिनमें परमात्मा बसता है।

अगर आपका किसी ऐसे आदमी से वास्ता पड़ता है जिसके अंदर यह कमी है तो आप उसका सामना करने की बजाय एक तरफ हो जाएं। दूसरों में **अवगुण** देखने वाले और नुख्स निकालने वाले आप कौन होते हैं? परमात्मा को प्राप्त करना आसान है लेकिन खुद को सुधारना बहुत मुश्किल है। अगर आपको यह समझ आ जाए कि परमात्मा हर एक के अंदर बसता है तो क्या आप दूसरों का दिल दुखाएंगे? हमें एक-एक करके अपने अंदर से

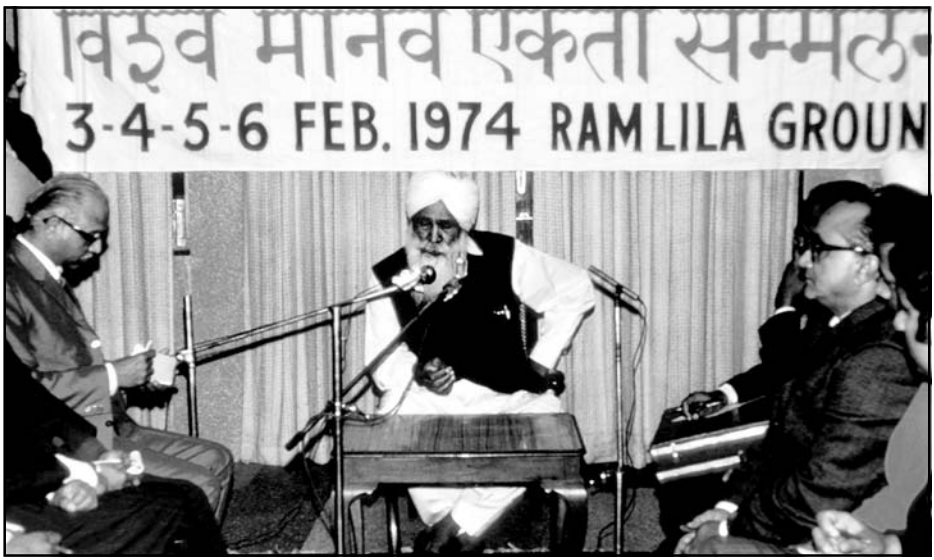

अवगुण और कमियां निकाल देनी चाहिए इसलिए मैं आत्मनिरीक्षण के लिए डायरी लिखने पर जोर देता हूँ।

अगर कोई दूसरों का दिल दुखाने का शैतानी **अवगुण** नहीं छोड़ता तो आप दूसरों की मदद करने का अपना नेक गुण क्यों छोड़ते हैं? अगर आपने दूसरों का निरीक्षण करना है तो उनके नेक गुणों का निरीक्षण करें। हर व्यक्ति में कुछ कमियां होती हैं और कुछ गुण भी होते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं आपको सलाह देता हूँ अगर आपको कमियां देखनी हैं तो अपने अंदर झाँककर देखें। अगर आपको नेक गुण देखने हैं तो दूसरों के नेक गुण देखें।''

आप मेरा कहा मानें सावधान हो जाएं अगर ऐसा नहीं किया तो आप पछताएंगे, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। अब यह आपके ऊपर है कि आपने इस पर अमल करना है या नहीं! परमात्मा ने हमें जुबान परमात्मा को याद करने के लिए दी है दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचाने के लिए नहीं दी। 7 फरवरी 1993

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतगुरु सबका पालनहार है

गुरु नानकदेव व गुरु अंगददेव की बानी | DVD -544 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

होया सुख ओले कौन दुख फोले आ सुण कृपाल प्यारेया होर सुणावां कीन्हू मैं ।।

सब सन्तों का यही संदेश है कि जिसने इस रचना को बनाया है उसने ही ये कानून बनाए हैं कि किस तरह दिन-रात बनाने हैं और सूरज, चन्द्रमा को अपनी-अपनी जगह पैदा किया है। इसी तरह उसने ये सारे ग्रह पैदा किए हैं। कोई उसे कुदरत कहता है लेकिन महात्मा उसे भगवान कहते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कुदरत दीसे कुदरत सुणिएं, कुदरत भाओ सुख सार।

आप कहते हैं कि आप उसे किसी भी नाम से बुला लें वह परमात्मा एक है जिसने इस रचना को पैदा किया है। उसके नियम पक्के हैं अपने आप चल रहे हैं। वह संसार में पशु-पक्षी इंसानों को पैदा करके बेफिक्र नहीं, वह सबको अपनी नज़र के नीचे रखता है।

महात्मा हमें यह भी बताते हैं कि अच्छे-बुरे जीव परमात्मा ने खुद ही बनाए हैं और वह दोनों को अपने नियमों के आधीन चला रहा है। हमें किसी की नुक्ताचीनी करने का अधिकार नहीं। जो गलत काम करता है उसके बुरे कर्म बन जाते हैं फिर परमात्मा उसे उन कर्मों को भोगने के लिए संसार में भेज देता है।

हमारा संगत में आना, गुरु का मिलना, नाम का मिलना पहले से ही तय होता है। जब तक हम लोग बाहर बैठे हैं हमें इस चीज़ की समझ न होने की वजह से हम परेशान रहते हैं। हम मानते हैं कि महात्मा ने जिन्हें नाम के साथ जोड़ दिया है उन लोगों की जिम्मेवारी ले ली है, **सतगुरु सबका पालनहार है**। नाम उन्हें देर-सवेर अपने साथ मिलाएगा। कमाई पर इसलिए जोर दिया

जाता है कि आप जीते जी भ्रम और वहम से निकलकर सच्चाई को खुद अपनी आँखों से देखें।

महाराज कृपाल पैगम्बर मूसा की कहानी सुनाया करते थे कि मूसा ने खुदा से कहा, ''आप हर व्यक्ति को रोजी देते हुए बहुत परेशान होते होंगे। हर एक की संभाल करनी बहुत मुश्किल होती है क्यों न मैं आपका हाथ बँटाऊ? आप यह ड्यूटी मुझे दें।'' खुदा ने कहा, ''मूसा! यह ड्यूटी निभानी बहुत मुश्किल है।''

आखिर खुदा ने मूसा को अपना प्यारा समझकर उससे कहा कि आज तू सबको रोजी दे। मूसा ने सबको रोजी दी लेकिन एक आदमी को रोजी नहीं दी। जिसे रोजी नहीं दी वह परमात्मा को भला-बुरा कहने लगा। खुदा ने मूसा को बुलाकर पूछा तो मूसा ने कहा कि उस आदमी का तो नाम लेना भी गुनाह है। वह बहुत बुरा आदमी है। वह मरी हुई औरत को कब्र से निकालकर उसके साथ गुनाह कर रहा था। क्या ऐसा आदमी भी रोजी का हकदार है? खुदा ने कहा, ''अगर वह बुराई करता है तो अपने लिए करता है; रोजी देने वाला तो बुराई नहीं कर रहा।'' **परमात्मा सबका पालनहार है।** वह अच्छे-बुरे सबके अंदर काम कर रहा है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आप खुद तजुर्बा करके 'शब्द' के साथ जुड़कर अंदर जाकर देख लें फिर आप किसी को बुरा कह दें तो हम आपको मान जाएंगे। जब हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर अंदर चले जाते हैं वहाँ कोई बुरा दिखाई नहीं देता वहाँ परमात्मा ही दिखाई देता है।''

हज़रत ईसा ने भी कहा था, ''आप अपने विरोधियों के लिए भी प्रार्थना करें।'' महान सन्त कबीर कहते हैं:

अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे।
एक नूर ते सब जग उपजया कोण भले कोण मंदे।।

जो लोग अपने आपको बहुत अच्छी कमाई वाला कहते हैं लेकिन दूसरी तरफ लोगों की निन्दा करने में लगे हुए हैं।

महाराज सावन सिंह जी की बहुत आलोचना की गई। एक फिरके ने तो आपके खिलाफ किताब भी छपवा दी। इसी तरह हमने महाराज कृपाल और कई सन्तों के मुत्तलिक बहुत कुछ सुना है कि दुनियादार उनके साथ किस तरह का बुरा सुलूक करते रहे। अफसोस से कहना पड़ता है कि सन्तमत के अनुयायी लोगों ने ही महात्माओं की निन्दा की और उनके साथ बुरा सुलूक किया। जब महाराज सावन से कहा गया कि आप इसका कोई जवाब दें तो आपने कहा, ''चुप ही सन्तों का जवाब होता है।''

प्यारेयो! सन्तों में बहुत नम्रता और विश्वास होता है। महाराज कृपाल से भी कहा गया कि आप इस किताब का जवाब दें तो आपने कहा, ''आओ! सब मिलकर बैठें। हम सब प्रभु का भजन करने के लिए आए हैं।'' लेकिन हम सच्चाई से दूर होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''झूठा आदमी सदा अपनी सफाई पेश करता है लेकिन समझदार आदमी वक्त की इंतजार करता है। वह कहता है कि वक्त इसे अपने आप ही बता देगा क्योंकि बुराई करते समय इंसान किसी खास बुरे कर्म के जज़्बात के नीचे होता है उसे अपनी होश नहीं होती।''

जिन लोगों ने महाराज सावन के खिलाफ एक विचारणी सभा बनाई थी वे हमेशा ही सीधी बात को उल्टा करके बताते थे। वक्त आने पर उनमें से कई लोग मुझसे नाम भी ले गए हैं। अब उनके

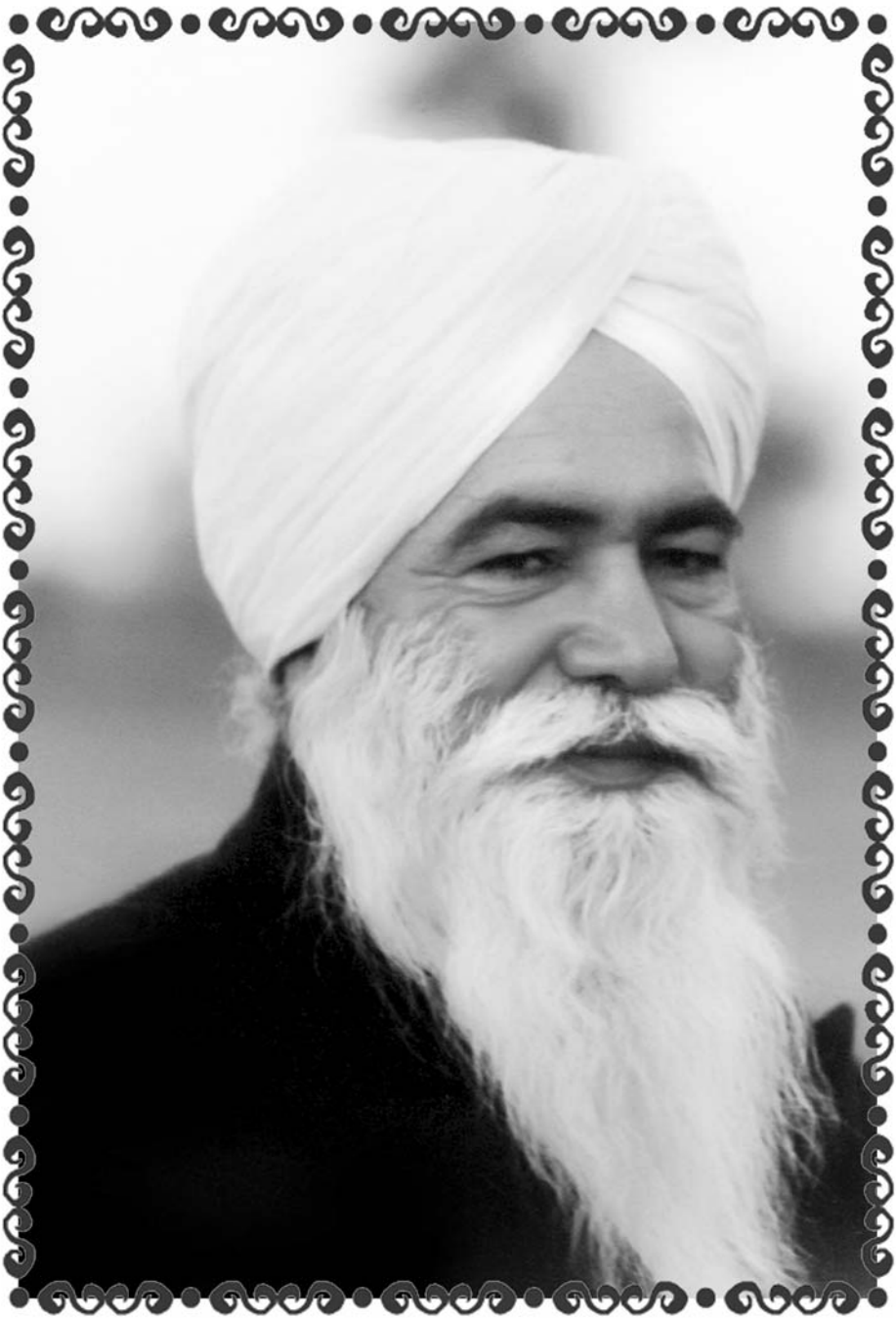

परिवार भी सतसंगी हैं लेकिन आज उनके पास पछतावे के सिवाय कुछ नहीं। वे कहते हैं कि हमने बहुत कुछ बुरा कमा लिया है।

प्यारेयो! आपके आगे गुरु अंगददेव जी का और गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। आप कहते हैं कि वह आप ही उपाय करता है, खुद ही जीवों को अपनी नजरों के नीचे रखता है किसे बुरा कहें सभी अच्छे हैं; सबका साहब परमात्मा एक है।

आप उपाय नानका आपे रखै वेक।
मंदा किसनूं आखिए जां सबना साहिब एक।
सबना साहिब एक है वेखै धंधे लाइ।
किसे थोड़ा किसे अगला खाली कोई नाहीं।।

आप कहते हैं, ''जैसे पिता अपने बच्चों को कुछ पूँजी देकर कहता है कि इससे व्यापार करें। समझदार बच्चे उस पूँजी को बढ़ा लेते हैं पिता उनसे खुश होता है। कई ऐसे भी होते हैं जो मूल भी गँवा लेते हैं, ऐसों को दुनियावी पिता फटकारें भी देता है।''

इसी तरह परमात्मा हमें श्वासों की पूँजी देकर इस संसार में भेजता है। कई तो यहाँ आकर अच्छा धंधा करते हैं, धंधे से कोई खाली नहीं लेकिन शाबाश उनकी है जो परमात्मा के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढ़ालते हैं प्रभु की भक्ति में वक्त लगाते हैं।

आवे नंगे जाहे नंगे विचे करहि विथार।
नानक हुक्म न जाणिंऐ अग्गे काई कार।।

गुरु नानकदेव जी महाराज बड़ी अचरज बात कहते हैं कि जीव संसार में नंगे आते हैं और जाते समय भी नंगे ही चले जाते हैं। मुट्ठी भींचकर जन्म लेते हैं और हाथ पसारकर चले जाते हैं।

हम यहाँ देखते हैं कि सब माया की दौड़ में लगे हुए हैं। कोई कम माया इकट्ठी करता है तो कोई ज्यादा माया इकट्ठी करता है लेकिन जाते सब खाली हाथ हैं।

जब नाम की कमाई नहीं की, शब्द के साथ जुड़े नहीं; अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद करके अंदर परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया तब आगे उसकी मर्जी है कि वह हमें क्या देता है? बीमारी का खोल दे! यह उसकी मर्जी है कि वह हमें कैसा जन्म देता है, उस जन्म में हमें क्या-क्या कष्ट भोगने पड़ते हैं?

हम देखते हैं कि बड़े-बड़े शक्तिशाली देशों के राष्ट्रपति प्रधानमंत्री और डिक्टेटर भी संसार छोड़कर चले जाते हैं। ऐसा कभी नहीं देखा कि वे अपने साथ फौजें या पूरा मुल्क ले गए हों। जीव नंगा ही जन्म लेता है और हाथ पसारकर यहाँ से चला जाता है। इतना कुछ देखकर भी हमारे कान पर जूँ नहीं रेंगती। हम सोचते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है हमारे लिए तो दुनिया की ऐशो-ईशरत और दुनिया के पदार्थ इकट्ठे करना ही है लेकिन यह हमारी भूल है। कबीर साहब कहते हैंः

ऐह तन कागज की पुड़िया बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनों भई साधो ईक नाम बिना पछताओगे।।

यह तन कागज़ की पुड़िया की तरह है। कागज पर पानी पड़ जाए तो कागज गल जाता है। यही हालत इस तन की है कोई बीमारी इस तन को खत्म कर देगी, कोई रोग लग जाएगा, बुढ़ापा आ जाएगा; आपको नाम के बिना पछताना पड़ेगा।

जिनस थापि जिआं कोऊ भेजे जिनस थापि ले जावे।
आपे थापि उथापे आपे ऐते वेस करावे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा जीवों को श्वांसो रूपी पूँजी और बुद्धि देकर भेजता है वक्त पूरा होने पर बुला लेता है। ऐसा नहीं कि पैदा कोई और करता है लेकर कोई और जाता है; यह इंतजाम परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है।''

जेते जीव फिरे अधूति आपे भिखिया पावे।

आप कहते हैं कि आपको आँखों से जो छोटे-बड़े दिखाई देते हैं ये सब भिखारी हैं। परमात्मा सबको कर्मों के मुताबिक भिक्षा देता है लेकिन यह कहना बहुत मुश्किल है क्योंकि हम मन-बुद्धि के फैलाव में हैं। हम कहते हैं कि हम समझदार हैं हमने इस तरीके से काम किया तभी कमाया है लेकिन जिंदगी का तजुर्बा है कभी-कभी अच्छे व्यापारियों का भी दिवाला निकल जाता है। वे इतने समझदार थे तो दिवाला क्यों निकला? सब कुछ परमात्मा के हुक्म में होता है। हम परमात्मा से इसलिए दूर हैं अगर हम कोई अच्छा काम करते हैं तो उसका क्रेडिट खुद लेते हैं अगर घाटा पड़ गया या कुछ बुरा हो गया तो हम परमात्मा में नुख्स निकालते हैं।

हमें पता है कि कलयुग में डॉक्टरी ने बहुत कमाल कर लिया है बनावटी दिल लगा देते हैं और भी चमत्कार है जिन्हें सुनकर बुद्धि अचम्भा हो जाती है कि ऐसा किस तरह हुआ! आज के जमाने में साईंस ने बहुत तरक्की कर ली है। लोगों की बहुत तीक्ष्ण बुद्धि है लेकिन इतना होने के बावजूद परमात्मा जिसे ले जाना चाहता हैं तो सारे यत्न फेल हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

वैद्य कहे हौं ही भला दारू मेरे वस।
ऐह ते वस्त गोपाल की जब भावे ले खस।।

गुरु नानकदेव जी महाराज अपनी बानी में कहते हैंः

औखद आए रास जेह विच आप खलोया।

डॉक्टर की दवाई वहाँ काम करती है जहाँ आकर परमात्मा खुद खड़ा हो जाता है कि मैंने इस जीव की मदद करनी है, अभी इसे श्वासों की पूँजी देनी है और डॉक्टर को भी यश दिलवाना है।

लेखे बोलण लेखे चलण काउति कीचहि दावे।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''आप धरती पर जो कदम रखते हैं चलते फिरते हैं, जो बोलते हैं वह भी परमात्मा सुनता है यह सब लेखे में है। परमात्मा रजिस्टर बनाता है, आप यह न सोचें कि वह देखता नहीं।'' जिन महात्माओं की आँखे खुली हैं वे कहते हैं कि परमात्मा आपको हर जगह देख रहा है।

आज तक जो भी महात्मा संसार में आए हैं सब कहते हैं कि शब्द-नाम की कमाई करें। आपको परमात्मा ने जो श्वांसों की पूँजी दी है इसे लेखे में लगाएं। नम्रता महात्मा का श्रृंगार होता है वह एक नमूना बनकर संसार में आते हैं और हमें प्यार से समझाते हैं, ''अगर परमात्मा ने आपके कर्मों के मुताबिक आपको कोई शक्ति या हुनर विद्या दी है तो आप देने वाले का धन्यवाद करें।''

मूल मति परवाणा ऐहो नानक आखे सुणाए।
करणी ऊपर होय तपावस जे को कहे कहाए।।

गुरु नानकदेव जी हमें चेतावनी देते हैं कि आप जैसी करनी करके अंदर जाएंगे वहाँ आपको बताया जाएगा कि आपने दुनिया में क्या-क्या किया। वहाँ जीव अपनी आँखों से देखता है मुकर नहीं सकता। आप बातों से भक्त नहीं बन सकते तपा नहीं बन सकते, कमाई करके ही तपा या भक्त बन सकता है। परमात्मा को पाखंड प्यारा नहीं भक्ति और सच्चाई प्यारी है। कबीर साहब कहते हैं:

पाखंडिया नर भोगे चौरासी खोज करो मन माही रे।

प्रभु को भक्ति प्यारी है आप वही करें। बातें करके हम दुनिया को धोखा दे सकते हैं और अपने आपको भी धोखा दे रहे हैं। सोचते हैं कि कौन देख रहा है? जो हमारे अंदर बैठा है वह हमारी हर हरकत को देख रहा है। आपका खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना सब लेखे में है।

गुरमुख चलत रचायन गुण प्रगटी आया।

जो महात्मा परमात्मा के बच्चे बन गए हैं वे इस दुनिया को तमाशा समझते हैं कि किस तरह जीव परमात्मा के हुक्म में दौड़े फिरते हैं अपने-अपने धंधों में लगे हुए हैं।

गुरबाणी सद उचरे हरि मन वसाया।

आप कहते हैं, ''जो उठते-बैठते 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं परमात्मा उनके मन में बस जाता है।''

शक्ति गई भ्रम कटया शिव जोत जगाया।

आप कहते हैं, ''अंदर से शक्ति माया का भ्रम निकल गया और परमात्मा की जोत प्रकट हो गई।''

जिनके पोते पुन्न है गुर पुरख मिलाया।

आप अपना तजुर्बा बयान करते हैं कि पीछे जिनके बहुत अच्छे कर्म और पुण्य जमा हो जाते हैं सिर्फ उन्हीं लोगों को गुरु की जानकारी मिलती है और वही गुरमुखों से नामदान प्राप्त करते हैं।

नानक सहजे मिल रहे हरि नाम समाया।

गुरु साहब ने इस शब्द में नाम की महिमा गाई है कि हमारे ऊपर गुरु की दया हुई हम परमात्मा से मिल गए। जिनके खाते में पुण्य होते हैं उन्हें ही गुरमुख मिलते हैं, उनके अंदर नाम लेने की और नाम की कमाई करने की इच्छा पैदा होती है।***

27 दिसम्बर 1988

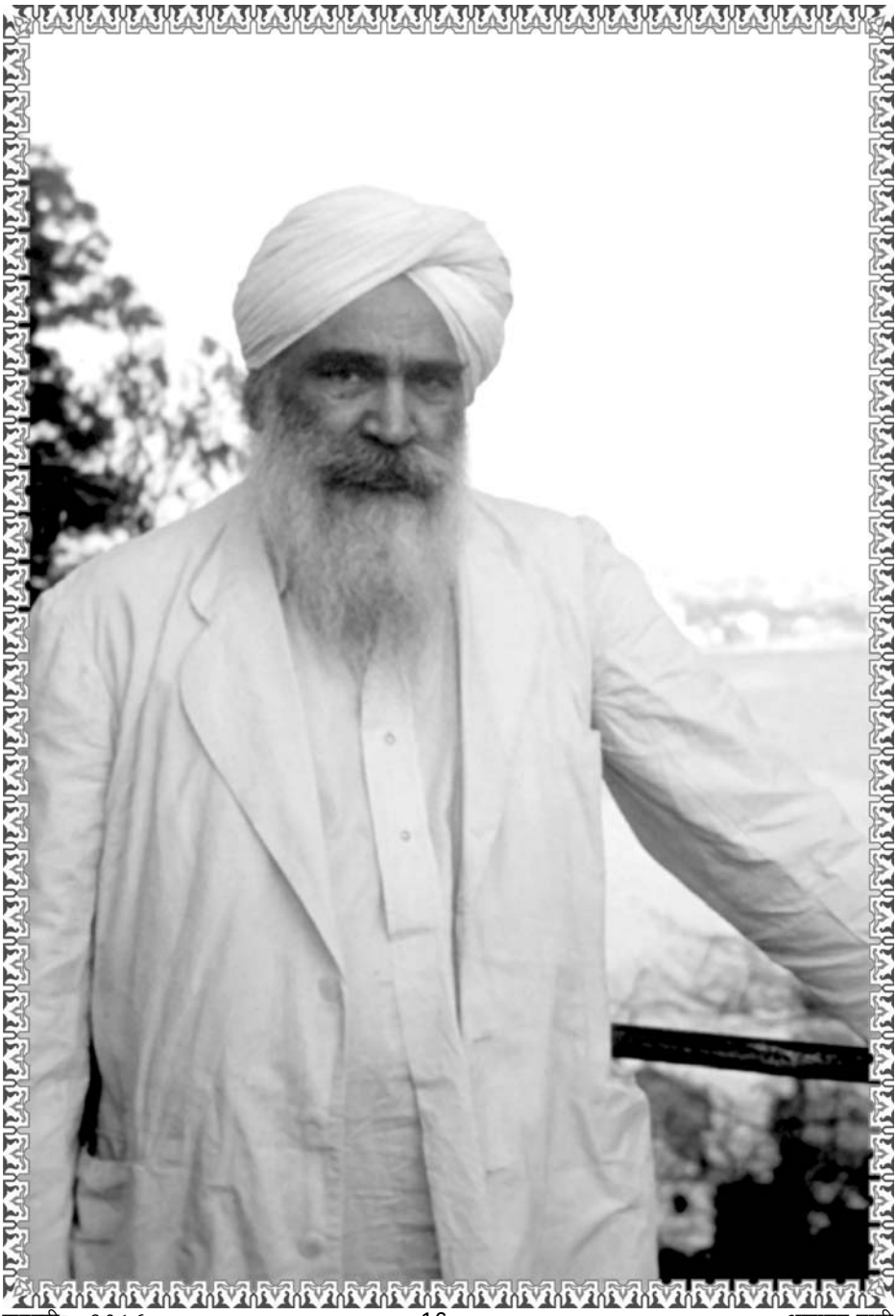

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

इच्छाएं

17 अक्टूबर 1972

सन्तबानी आश्रम, अमेरिका

तन धर सुखिया कोई न देखया जो देखया सो दुखिया हो।

सतगुरु कहते हैं, ''क्या कारण है कि हम सुखी नहीं हैं?'' खुशी के पैदा होने का कारण तो आपके अंदर है लेकिन आप सारी जिंदगी अच्छा खाने-पीने में, अच्छे कपड़े पहनने में अच्छी चीज़े देखने और संगीत सुनने में ही खुशी ढूंढ़ते रहे हैं। अगर आप बाहर से हटकर शरीर के अंदर के चैतन्य से ऊपर उठ गए होते तो आपने ज्योति के पैदा होने का स्थान पा लिया होता।

सतगुरु कहते हैं कि इंसानी जामा सारी सृष्टि में सबसे ऊँचा है। दुनिया की सारी खुशियां सारे आनन्द व ज्ञान आपके अंदर है। इन **इच्छाओं** को पूरा करने के लिए आपको इंसानी जामें में आना पड़ेगा। बाहरी प्रवृतियों के कारण ही हमारा यह शरीर पहचाना जाता है। इनमें हमारा चित्त इतना समा गया है कि हम अपने आपको भूल गए हैं; आप अंदर से जागें।

यह शरीर कितने समय तक चलेगा? कुछ दिन, कुछ साल आखिर हमें इस शरीर को छोड़ना पड़ेगा। यह हमारे लिए सुनहरी मौका है कि हम खुशी के पैदा होने के स्थान की तलाश करें जोकि हमारे अंदर है लेकिन यह तभी होगा जब हम अपने शरीर की चेतना से ऊपर उठ जाएं।

जब सन्त-सतगुरु संसार में आते हैं तो हमें यही सिखाते हैं कि शरीर की चेतनता से ऊपर उठें और बाहर से अपना ध्यान हटा लें। आत्मा की सीट दोनों आँखों के बीच है। मौत के समय जब

आत्मा शरीर को छोड़ती है तो यह आँखों के पीछे सिमट जाती है। और तब ऊपर की तरफ चढ़ती है तो आप देखेंगे कि वहाँ जीवन का जल बह रहा है।

शरीर के नीचे से ध्यान को हटाएं ऊपर जाएं यही ज्योति की तरफ जाने का रास्ता है, यही परमात्मा की ओर वापिस जाने का मार्ग है। बाहर का जीवन आपको थोड़े समय के लिए दिया गया है, इसका भरपूर फायदा उठाएं आखिर आपको यह शरीर छोड़ना है। शरीर को छोड़ने का मतलब मौत है। मरते हुए आदमी का ध्यान बाहर से हट जाता है अगर कोई आदमी उसके पास जाता है तो वह उसे नहीं पहचानता क्योंकि तब आत्मा शरीर से सिमट रही होती है। उस समय शरीर अचेत हो जाता है, आँखे ऊपर हो जाती हैं वह संसार से चला जाता है; इसे ही रूहानियत कहते हैं।

अरे इंसान! इस शरीर को छोड़ना सीख। आखिर तुमने देर-सवेर इस शरीर को छोड़ना है। हो सकता है तुम सोने जाओ और कभी उठो ही नहीं। नींद मौत की छोटी बहन कहलवाती है।

हम परिवार, सम्बन्धी, मित्रों व बाहरी आमोद-प्रमोद से बंधे हुए हैं। जब हम एक ही कार्य रोज करते हैं तो यह हमारी आदत बन जाती है आदत स्वभाव में बदल जाती है फिर हम अपनी आदत नहीं छोड़ सकते। हम मौत को भूल जाते हैं सोचते हैं कि हम तो यहाँ मौज करने आए हैं अगर आप इस बारे में अंजान रहेंगे तो फिर क्या होगा? आखिर एक दिन तो आपको यहाँ से जाना ही है।

यह बंधन क्यों बढ़ता चला जाता है? क्योंकि आप इनमें धँसते चले जाते हैं। उन सारी **इच्छाओं** को छोड़ें जो बाहर से जुड़ी हैं। भगवान बुद्ध कहते हैं, ''इच्छा रहित बनें।'' दसवें गुरु साहब भी

यही कहते हैं, ''इच्छा रहित बनें।'' **इच्छा** ही वह चीज़ है जो आपको रोज-रोज बाहर की तरफ खींचती है जिस वजह से आप सिर के बल नीचे गिरेंगे; बाहर की चीज़ों से बंधन का कारण आपकी **इच्छाएं** हैं।

महान अकबर का वजीर-ए-आजम वली राम था। अकबर के दरबार में यह परंपरा थी कि जब बादशाह दरबार में आता तो सभी वजीर खड़े हो जाते थे और तब तक हिल नहीं सकते थे जब तक बादशाह बैठ नहीं जाता था। एक दिन वली राम के कोट में बिच्छु था, बादशाह आ रहा था इसलिए वह बादशाह के आदर-सम्मान में हिल नहीं सकता था। बिच्छु ने वली राम को एक जगह डंक मारा फिर दूसरी जगह डंक मारा इस तरह बिच्छु ने वली राम के शरीर पर तीन-चार बार डंक मारे।

जब बादशाह बैठ गया तो वली राम ने कहा, ''देखिए! इस बिच्छु ने मुझे कई बार डंक मारा लेकिन मैं बादशाह की आज्ञा पालन में हिला नहीं। बादशाह की आज्ञा का पालन करने से मैं वजीर-ए-आजम बना और मुझे इतनी ऊँची पदवी मिली अगर मैं परमात्मा की आज्ञा का पालन करूं तो मैं इससे भी बड़ा बन सकता हूँ।'' यह कहकर वली राम ने अपना कोट उतार कर फैंक दिया और जंगल की तरफ भाग गया।

बादशाह अकबर वली राम को बहुत पसंद करता था। बादशाह ने उसे वापिस लाने के लिए एक वजीर को भेजा। वजीर की मिन्नतों के बावजूद भी वली राम ने उससे कहा, ''मैंने पहले वह सेवा की थी लेकिन अब मैं परमात्मा की सेवा में लग गया हूँ।'' फिर बादशाह स्वयं वली राम के पास गया और बादशाह ने कहा, ''देखो वली राम! आप मेरे सबसे बड़े बुद्धिमान वज़ीर-ए-आजम

हैं। मैं आपकी बहुत इज्ज़त करता हूँ और आपसे प्यार करता हूँ। क्या आप मेरे साथ वापिस नहीं चलोगे?'' वली राम ने कहा, ''नहीं! अब मैं दूसरी सेवा में लग गया हूँ। यह सेवा आपकी सेवा से बढ़कर है।'' बादशाह ने कहा, ''वली राम! तुम जो मांगोगे मैं तुम्हें वह दे सकता हूँ।'' तब वली राम ने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि आप इस स्थान से चले जाएं।''

ये **इच्छाएं** ही हमें बाहरी चीज़ों से बांधती हैं। हम वज़ीर बन सकते हैं, बादशाह बन सकते हैं; हम कुछ भी बन सकते हैं। मनुष्य जो पाना चाहता है उसे पा लेता है इसके लिए हमें सही-गलत सब कुछ करना पड़ता है। सतगुरु कहते हैं कि जब तक आप इच्छारहित नहीं बन जाते तब तक आप शरीर और बाहरी चीज़ो को नहीं छोड़ सकते। इच्छाओं को त्याग दें बेशक ये **इच्छाएं** ही आपको बाहरी चीज़ों से बांधती हैं अगर आपके अंदर परमात्मा को पाने की इच्छा है और आप उसके बनते हैं तो आप अचिन्त हो जाएंगे।

आप जानते हैं कि क्या हो रहा है? श्वांस दिन-रात जा रहे हैं, आपके दिन गिनती के हैं। पूर्व दिशा के गुरु कहते हैं कि आपके श्वांस गिनती के हैं ये अवश्य समाप्त हो जाएंगे। श्वांस अंदर जाता है बाहर आता है लेकिन अभी हम बाहरी विचारों में डूबे हुए हैं। हम इस बारे में परवाह नहीं कर रहे बिल्कुल अंजान हैं।

जीवन का समय बीतता जा रहा है। समय किसी का इंतजार नहीं करता। यह पानी से भरे हुए घड़े के समान है जिसमें से बूँद-बूँद करके पानी रिस रहा है आखिर एक दिन यह घड़ा खाली हो जाएगा सारा पानी बाहर निकल जाएगा। इसी तरह से श्वांसो की गिनती या पानी की बूँदे एक-एक करके गिर रही हैं।

हम सोचते हैं कि हम बूढ़े हो रहे हैं लेकिन सच तो यह है कि हम छोटे हो रहे हैं। एक आदमी ने पचास साल जीना है अगर उसने दस साल बिता लिए तो उसके चालीस साल बाकी रह गए। बीस साल बिता लिए तो केवल तीस साल बाकी रहे। आप बड़े हो रहे हैं या छोटे हो रहे हैं?

सबसे पहले मनुष्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए। यही बात मुख्य है कि आपका लक्ष्य क्या है? मनुष्य के लिए सबसे ऊँचा लक्ष्य परमात्मा को जानना है। समय कम हो रहा है। मैं सोच रहा हूँ कि आप लोग जो यहाँ बैठे हैं इनमें से कोई बीस, तीस, चालीस, पचास या साठ साल का है। क्या आपने अपना लक्ष्य पा लिया है? वह लक्ष्य है परमात्मा को प्राप्त करना।

दिखावे से काम नहीं होगा आप स्वयं को धोखा दे रहे हैं और आपके अंदर जो परमात्मा बैठा है आप उसे भी धोखा दे रहे हैं। क्या आप परमात्मा के पास पहुँच गए हैं? क्या आपने परमात्मा को देखा है? क्या आप परमात्मा के प्रति सच्चे हैं? अगर ऐसा है तो बड़ी अच्छी बात है अगर ऐसा नहीं तो हमें जल्दी करनी चाहिए। जो थोड़ा बहुत समय बचा है उसमें से अधिक से अधिक समय इस तरफ लगाना चाहिए ताकि शरीर छोड़ने से पहले तैयार हो जाएं। जब समय पूरा हो जाएगा हमें इस शरीर को छोड़ना पड़ेगा, साँसों की गिनती पूरी हो जाएगी तब क्या होगा?

ये बहुत मामूली बातें हैं लेकिन यह कटु सत्य है। आप अपने जाँचकर्ता खुद हैं। क्या आप अपने प्रति सच्चे और ईमानदार हैं? क्या आप परमात्मा के साथ जुड़ गए हैं? आपके भले के लिए आपको नामदान दिया गया है, यह परमात्मा की दया है। आपको जो थोड़ा सा दिया गया है इसे आगे बढ़ाएं।

क्राईस्ट ने एक जगह कहा है, ''किसी धनवान आदमी ने एक आदमी को पाँच रूपये दूसरे आदमी को दो रूपये और तीसरे आदमी को एक रूपया दिया। कुछ समय बाद उस धनवान ने जिसे पाँच रूपये दिए थे उससे पूछा कि तुमने उन रूपयों का क्या किया? उस आदमी ने जवाब दिया कि मैंने पाँच के दस रूपये बना लिए है। जिसे दो रूपये दिए थे उससे पूछा कि तुमने क्या किया? उसने जवाब दिया कि मैंने दो के चार रूपये बना लिए हैं। जिसको एक रूपया दिया था उससे पूछा तो उसने कहा कि मैंने उसे संभालकर रखा हुआ है तो धनवान ने उससे वह रूपया वापिस ले लिया।''

आप मेरी बात समझें! मैं क्या कहना चाहता हूँ? आप अपनी सारी बुद्धि एक तरफ रख दें। देखें! ये कटु बातें हैं जो हमारे सामने आ रही हैं; ये दिल से दिल की बात हैं। मैं जो बातें आपके सामने पेश कर रहा हूँ क्या आप उस तरीके से नहीं देखते? हर दिन हर घंटा हर मिनट हर सैकिंड आपको मौत के नज़दीक ला रहा है।

हमारा बहुत समय नष्ट हो गया है, हमने अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं किया। जिसका परिणाम यह होगा कि हम बाहर बंधे रह जाएंगे और हमें फिर वापिस आना पड़ेगा। इसका कारण हमारी इच्छाएं हैं, **इच्छाएं** हमें वापिस लाएंगी। परमात्मा की इच्छा हमें परमात्मा के पास ले जाएगी। यह कानून है कि अंत समय में आपकी जो तीव्र इच्छा होगी आपको वहाँ भेज दिया जाएगा।

मैं आपको बहुत बड़ा प्रवचन नहीं दे रहा सिर्फ साधारण शब्दों में बता रहा हूँ। मैं आपको ऐसी कोई बात नहीं कह रहा जो आपको समझ न आए। बड़े दुख की बात है कि हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं। परमात्मा हमारे पास क्यों नहीं आता क्योंकि हम उसे धोखा देते हैं।

सच्चाई जानने के लिए दो जिज्ञासु एक सन्त के पास गए। सन्त ने यह जानने के लिए उनकी परीक्षा ली कि इन दोनों में से कौन लायक है? सन्त ने उन दोनों को एक-एक कबूतर देकर कहा, ''इसे वहाँ जाकर मारें जहाँ कोई न देखता हो?'' एक जिज्ञासु बहुत चुस्त और चालाक था। वह कबूतर को लेकर दीवार के पीछे गया कबूतर को मारकर कुछ ही समय में वापिस आ गया। दूसरा बेचारा सुबह से शाम तक फिरता रहा लेकिन उसे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला जहाँ कोई न देख रहा हो। उसने शाम को वापिस आकर सन्त से कहा, ''महाराज! मुझे ऐसा कोई स्थान नहीं मिला जहाँ मैं इस कबूतर को मार सकता क्योंकि हर जगह कबूतर मुझे और मैं कबूतर को देख रहा था।'' वही जिज्ञासु लायक बना।

ये बहुत ही साधारण बात है कि चाहे आपने एम. ए. पास की है चाहे आपने पी. एच. डी की है चाहे आप कोई राजा या बादशाह हैं इसकी कोई कीमत नहीं। आपको यह शरीर छोड़ना पड़ेगा और वहाँ जाना पड़ेगा जहाँ से आप जुड़े हुए हैं। समय-समय पर सतगुरु हमें शरीर से बाहर निकालने के लिए आते हैं। उनका पहला सबक क, ख,ग है।

आप जितना बाहर से जुड़े होंगे ऊपर नहीं जा सकते। डायरी इसीलिए दी जाती है कि आपने कितनी तरक्की की कितना समय दिया और आप किन चीज़ों से बंधे हुए हैं? आप उन्हें एक-एक करके छोड़ दें। आप अपना कितना समय बर्बाद कर रहे हैं। सभी सतगुरु ऐसा कहते हैं कि परमात्मा हर समय आपको अंदर से बुला रहा है। आपके अंदर ऊपर से वह शब्द धुनकारे दे रहा है।

तुलसी साहब कहते हैं, ''गगन से धुन की आवाज आ रही है जो मुझे वापिस बुला रही है।'' शम्स तबरेज कहते हैं, ''मैं इस

शरीर रूपी मंदिर में आवाज सुन रहा हूँ। वह आवाज मुझे वापिस बुला रही है कि आ जाओ, तेजी से घंटा बज रहा है।'' हम इस आवाज़ को नहीं सुनते। आपको ज्योति दिखाई जाती है जिससे आपको पता चले कि आपने किस रास्ते से जाना है और आवाज़ उस दिशा को दर्शाती है कि परमात्मा की ओर जाने के यही दो रास्ते हैं।

सतगुरु सदा यही कहते हैं कि ये सब क्या है, ऐसा क्यों होता है? ये सब हमारी इच्छा के कारण होता है। हम स्वयं को भूले हुए हैं। यह भूल मानव शरीर से शुरू होती है और हम इस शरीर से ही पहचाने जाते हैं। यह शरीर बदल रहा है, यह संसार बदल रहा है। हम बड़ी भूल में पड़े हुए हैं। ये **इच्छाएं** हमें बाहरी संसार में लगाए रखती हैं। जब हम शरीर छोड़ते हैं तो हमारे अंदर संसार की बाहरी इच्छाएं होती हैं लेकिन परमात्मा की इच्छा संसार की इच्छाओं से बहुत बेहतर है।

सतगुरुओं ने हमें बड़े ही सरल उपदेश दिए हैं जिन्हें एक बच्चा भी आसानी से समझ सकता है फिर विद्धान लोगों की बात ही क्या है? लेकिन विद्धान लोग दिमागी कुश्ती में इन चीज़ों को भूल जाते हैं। सतगुरु आपसे बहुत प्यार करते हैं। परमात्मा सतगुरु में है आप परमात्मा के बच्चे हैं। परमात्मा हर समय आपको लाने के लिए सतगुरु को भेजता है।

मुख्य बात यह है कि इसमें कौन आपकी मदद कर सकता है? कोई गुरु जो पूर्ण पुरुष हो और इस शरीर की चेतनता से ऊपर उठ चुका हो। अपनी इच्छा से ऊपर जाता हो वह संसार में काम करता नजर आता है लेकिन बंधन मुक्त होता है। नाव पानी में है लेकिन नाव में पानी नहीं। वह सदा कहता है, ''देखो! परमात्मा आपको वापिस बुला रहा है परमात्मा आपके अंदर है।''

आपने वह वस्तु प्राप्त कर ली है लेकिन अभी आप अज्ञानी हैं। आप बाहर बंधे हुए हैं भ्रम में पड़े हैं। जब आपको ऐसा गुरु मिल गया है जिसको परमात्मा ने इसी काम के लिए भेजा है वह आपसे प्यार करता है क्योंकि आप परमात्मा के बच्चे हैं। वह हम पर दया करता है और हमारे सब कामों की देखभाल करता है।

जब हम गुरु के चरणों में जाते हैं तो उसे हमारी देखभाल करनी पड़ती है। वह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों को समाप्त कर देता है और हमें वापिस निज घर ले जाता है। खास बात यह है कि हम उसका कहना मानें। अक्सर हम उसका हुक्म नहीं मानते हम खुद को धोखा देते हैं। जो परमात्मा हमारे अंदर है हम उसे भी धोखा देते हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप सच्चे बनें।

आखिर एक दिन आपने बाहर की सारी चीज़े बाहर के सारे सम्बंध और धन सम्पत्ति को छोड़ना है। अगर आप अभी से धीरे-धीरे छोड़ना शुरू देंगे तो ये चीज़ें भी आपको छोड़ देंगी। जब हम बाहरी चीज़ों में डूबे रहते हैं तो खुशी महसूस करते हैं। जब ये चीजें हमसे दूर हो जाती हैं तो हम दुख महसूस करते हैं। सतगुरु आपको परमात्मा की ताकत से जोड़ने के लिए आते हैं।

सतगुरु आपको सदा रहने वाली शान्ति और खुशी देना चाहते हैं। आप जहाँ भी हैं वहीं रहें। आपने शरीर पर जो लेबल लगा रखें हैं उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। चाहे हम किसी भी धर्म या किसी भी गुरु को मानते हैं लेकिन हमारे लिए जो नियम बनाए गए हैं उन पर चलना जरूरी है।

किसी गुरु के चरणों में जाना बहुत बड़ी रहमत है। जो परमात्मा के लिए तड़प रहे हैं गुरु उनका मिलाप परमात्मा से करवाता है।

जिसमें जितनी ज्यादा भूख होगी वह उतनी जल्दी इसे प्राप्त करेगा। परमात्मा को प्राप्त करने की **इच्छा** आपको परमात्मा के निकट लाएगी। आप परमात्मा के लिए एक कदम चलेंगे तो वह आपको लेने के लिए सैंकड़ो कदम चलकर आएगा। आप दुनिया की **इच्छा** करेंगे तो आप नीचे की ओर जाएंगे; बस इतनी सी ही बात है।

मैंने आपके आगे जो प्रवचन रखा है आप उस पर शान्ति से विचार कीजिए अगर आपके अंदर परमात्मा को पाने का जुनून रहेगा तो सारी चीज़े एक तरफ रह जाएंगी। आप यह शरीर छोड़कर यकीनन ही परमात्मा के पास जाएंगे। आप अभी से परमात्मा के साथ हो जाएंगे। कुरान में परमात्मा कहता है, ''जो मुझे याद करते हैं मैं उन्हें याद करता हूँ।''

हम संसार को जितना शौंक से देखते हैं उतने शौंक से अपने आपको नहीं देखते। जब तक हम अपने आपमें नहीं झाँकते तब तक हम कैसे जान सकते हैं कि हमारी तकदीर में क्या लिखा हुआ है? हम सदा दूसरों को बाहरी तौर से देखते हैं।

अभी से परमात्मा की मधुर याद बनाएं। इस प्यारी याद को लगातार तीन दिन तक रखें। रामा कृष्ण कहते हैं, ''जो आदमी परमात्मा को लगातार तीन दिन तक याद करता है वह परमात्मा के दर्शन करेगा।'' यह एक जुनून बन जाएगा तीन दिन तक लगातार परमात्मा की मधुर याद बनाएं। बस! इतना ही।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को संदेश

विदाई संदेश

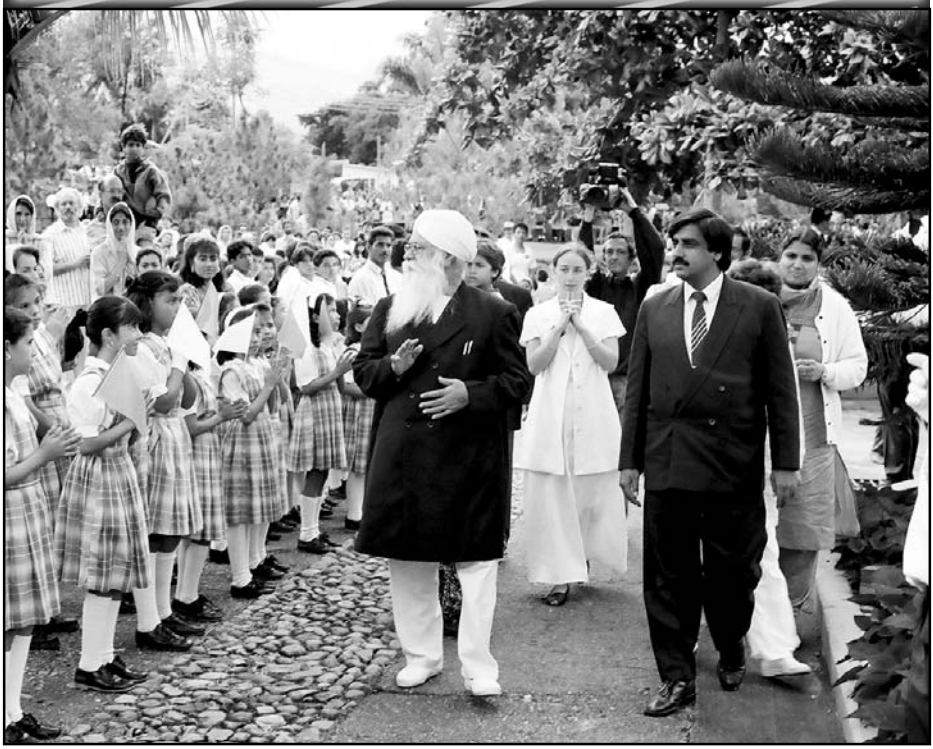

सभी सन्त-महात्माओं ने सतसंग की महिमा गाई है। ऊँचे भाग्य हों तो ही हमें सतसंग मिलता है, सतसंग के जरिए हमारे अंदर वैराग, विरह और तड़प पैदा होती है। हम जो कुछ सतसंग में सुनते हैं हमारा फर्ज बनता है कि हम उस पर अमल करें। मोटे-मोटे थोड़े से पाप होते हैं। आमतौर पर हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के जरिए ही पाप करते हैं।

सन्त-महात्मा इन पांच डाकुओं के मुत्तलिक बहुत प्यार से समझाते हैं कि ये किस तरह हमारी नाम की पूंजी लूट रहे होते हैं

अगर हम एक सतसंग में एक ऐब छोड़े तो हम थोड़े से सतसंगों में ही कामयाब हो सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सतसंग करत बहुत दिन बीते, अब तो छोड़ पुरानी बान।

सतसंग करते-करते हमारी जिंदगी चली जाती है। हमें सतसंग को रस्मों-रिवाज नहीं बनाना चाहिए कि सतसंग में गए, आ गए। सतगुरु महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए दी। डायरी अपने जीवन को बनाने के लिए सबसे अच्छा और उत्तम साधन है। सारे सन्तों ने अपने-अपने तरीकों के मुताबिक हमें ऐबों-पापों की तरफ से रोका है अगर हम अपने अंदर से सारे बुरे विचारों को झाड़ू लगाकर बाहर निकाल दें तभी हम परमात्मा से मिलने के काबिल हो सकते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी रोपड़ के इलाके में गए। वहाँ आपको बहुत से आदमी मिले। आपने उनसे पूछा, ''आप लोग क्या कारोबार करते हैं?'' उन्होंने कहा, ''हम चोरी-डाके मारते हैं।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''प्यारेयो! आप इसका हिसाब-किताब कैसे देंगे? इस मौत के बाद कोई आपका हिसाब-किताब लेने वाला भी है।'' उन आदमियों ने कहा, ''हमें आज तक किसी ने यह नहीं बताया कि कोई हमसे हिसाब-किताब भी मांगेगा।'' हम तो सोचते हैंः

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

आप परोपकारी महात्मा हैं आप ही हमें कोई तरीका बताएं जिससे हम बच जाएं। उस दिनों में दुनिया इतनी पढ़ी-लिखी नहीं थी। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उनसे कहा कि जब आपसे पाप हो जाए तो आप एक कंकड़ उठाकर एक जगह रख दिया करें फिर पाप हो जाए तो उसी जगह कंकड़ उठाकर फिर रख दे। शाम को सोते समय देखें कितने कंकड़ हो गए हैं विचार करें कि आपसे कितने

पाप हुए हैं। उस गांव के सारे लोगों ने ऐसा ही किया जब शाम को कंकड़ो के बड़े-बड़े ढ़ेर लगे हुए देखे तो सबने बैठकर विचार किया कि हम पहले तो इकट्ठे नहीं होते थे महात्मा की सोहबत की वजह से हमें इकट्ठे होने का मौका मिल गया। जिस तरह आज हम सब यहाँ इकट्ठे हुए बैठे हैं।

इसी तरह सबने इकट्ठे होकर बताया कि तेरे कितने कंकड़ हैं तेरे कितने हैं? वे कहने लगे कि हम इनका हिसाब-किताब किस तरह देंगे? आखिर सारे गांव ने बैठकर सोचा कि न हम पाप करेंगे न लेखा देंगे। जब फिर गुरु गोबिंद सिंह जी वहाँ गए तो वे लोग आपसे पहले से ज्यादा कद्र करके मिले कि यह वह हस्ती है जिसने हमारे ऐब-पाप छुड़ाए हैं और हमें परमात्मा की तरफ लगाया है।

गुरु साहब ने पूछा आपकी क्या हालत है? उन्होंने बताया कि अब हमारे दुनियावी कारोबार भी ठीक हैं और हम रोज भगवान की भक्ति भी करते है। हमारे मन को ज्यादा से ज्यादा शान्ति है। हमने एक दिन ही कंकर इकट्ठे किए उसी दिन बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए। अब हम न पाप करें न लेखा दें। हमें आपके नाम, उपदेश और रहनुमाई की जरूरत है। आप सोच सकते हैं अगर उस गांव को महात्मा न मिलते तो किस तरह उस गांव का सुधार होता।

इसी तरह महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने की हिदायत दी कि आपने पूरे दिन जो भी पाप-ऐब किए या किसी तरह किसी की निन्दा की या पैसे से किसी का फायदा या नुकसान किया और पूरे दिन में कितना भजन किया। इससे सतसंगी को अपने आपको सुधारने का बेहतर मौका मिलता है। जब अमेरिका में बहुत से प्रेमियों ने मुझसे सवाल किए कि महाराज कृपाल ने डायरी दी आप इसके मुत्तलिक कुछ रोशनी डालें। मैंने कहाः

सौ स्याणयां इको मत, मूर्खा आपो आपणी।

सब समझदार लोगों की एक ही मत होती है। मैं बहुत से प्रेमियों की डायरियां देखता हूँ वे आमतौर पर रोजाना वही गलतियां दोहराते जाते हैं। प्यारेयो! जब हम गलती मानकर उसे डायरी में लिख लेते हैं फिर दूसरी बार वही गलती क्यों की जाए? डायरी रखने का फायदा तभी है अगर हम अपने आपको सुधारें। आज पाप हो गया हमने उसे डायरी में लिख लिया फिर वही पाप क्यों हो? लेकिन हमने डायरी को भी एक रस्मों-रिवाज बना लिया है।

आज भंडारे का आखिरी दिन है। सतगुरु ने दया करके हमें कई सतसंग दिए हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हमने जो कुछ सतसंग में सुना है उस पर अमल करें। बाबा सोमनाथ की जिंदगी काफी संघर्ष से गुजरी है, आपने काफी तप और साधना की थी। साधना करते हुए आपकी किस्मत में महाराज सावन सिंह जी से मिलाप लिखा हुआ था। महाराज सावन सिंह जी के साथ आपका मिलाप हुआ तो आपके जीवन ने पलटा खाया। आप जो पहले करते थे उसे छोड़ दिया। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

जब जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब भ्रम नसावे।
जो मार्ग गुरु दे बताई, सोई कर्म धर्म हुआ भाई।।

जब हम गुरु की शरण में आ गए, पहले हम जो कुछ रीति-रिवाज करते हैं अगर उस रीति-रिवाज को ठप्पकर रख देते हैं और गुरु के बताए रास्ते को अपना लेते हैं तो हम अपनी जिंदगी में कामयाब हो जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी की वजह से मेरी थोड़ी बहुत मुलाकात बाबा सोमनाथ के साथ हुई। मैंने भी बाबा सोमनाथ की तरह परमात्मा की खोज में काफी धूनियां तपाई और जलधारे वगैरहा

किए। मैंने पेशावर में महाराज सावन सिंह जी के दर्शन किए थे। मैंने बाबा बिशनदास को महाराज सावन के बारे में बताया। मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था।

बाबा बिशनदास जी कुँए के मेंढ़क नहीं थे। कुँए का एक मेंढ़क समुद्र के हंस के पास चला गया। मेंढ़क ने हंस से पूछा, ''तू कौन है?'' हंस ने कहा, ''मैं समुद्र का एक गरीब हंस हूँ।'' मेंढ़क ने हंस से पूछा कि समुद्र कितना बड़ा है? हंस ने कहा कि समुंद्र काफी बड़ा है। मेंढ़क ने थोड़ा सा चक्कर काटकर पूछा कि समुंद्र इस कुँए से भी बड़ा है? हंस ने कहा हाँ इससे बड़ा है। मेंढ़क ने फिर चक्कर काटकर पूछा इससे भी बड़ा है? हंस ने कहा हाँ इससे भी बड़ा है। आखिर मेंढ़क कुंए के दूसरी तरफ खड़ा होकर कहने लगा क्या इससे भी बड़ा है? हंस ने कहा हाँ इससे भी बड़ा है। मेंढक ने कहा कि तू बेईमान है झूठ बोलता है। समुद्र इससे बड़ा हो ही नहीं सकता। हंस ने प्यार से कहा कि तू मेरे साथ चलकर तो देख! समुद्र तेरे कुँए से बहुत बड़ा है। अब न मेंढ़क कुँए से निकले न समुद्र को देखे न वह माने।

हमारी भी यही हालत है कि हम समाजों की जकड़ को नहीं छोड़ते हैं और कर्मकांड से नहीं निकलते। हम सन्तों के साथ जाकर अपने घर सच्चखंड को नहीं देखते। सन्त-महात्मा अंधविश्वास नहीं देते। वे हमें प्यार से कहते हैं कि आप खुद अंदर जाकर देखें फिर ऐतबार करें लेकिन हम तैयार नहीं होते क्योंकि हमारे अंदर अपने घर को देखने का शौक पैदा नहीं हुआ।

मैं जिस समय बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन के पास लेकर गया उस समय बिशनदास जी के साथ एक मुसलमान फकीर फत्ती भी था। बाबा बिशनदास और फत्ती फकीर का आपस

में बहुत प्यार था। इन दोनों के आश्रम नजदीक ही थे। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''यह मेरा एक ही शिष्य है, मैंने और ज्यादा किसी को रास्ता नहीं दिया। यह काफी कर्मकांड करके मेरे पास आया था। मैंने इसे अपनी अक्ल के मुताबिक यह जरूर कहा था कि मेरे पास इतना ही रास्ता है अगर तुझे इससे ऊपर कुछ मिले तो मुझे जरूर बताना। मैं अपने इस शिष्य की वजह से ही आपके चरणों में आया हूँ।'' उस समय महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ को बुलाया कि हमारा भी एक शिष्य है इसने जिंदगी में काफी संघर्ष किया है बाहर बहुत साधन किए हैं। बाबा सोमनाथ के साथ मेरी इतनी ही मुलाकात थी।

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ से जो कुछ कहा आपने उस पर अमल किया। महाराज सावन ने आपकी ड्यूटी दक्षिण भारत में लगा दी। आप जिन आत्माओं के अंदर प्यार का बीज बो गए थे उनकी बदौलत ही आज हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं। रात को सतसंग में आया थाः

सतगुरु की महिमा सतगुरु जाने, जो कुछ करे सो आपण भाणें।।

वह अपनी महिमा खुद ही जानते हैं, वे जो कुछ करते हैं उन्हें ही पता होता है। किस जीव की कहाँ ड्यूटी लगानी है किससे क्या काम लेना है? बाबा सावन सिंह जी महाराज ने डलहौजी के इलाके में जाकर नामदान दिया। जिन्हें नाम दिया उन्हें बहुत अच्छे-अच्छे तजुर्बे हुए कईयों की सुरत लगी। महाराज सावन सिंह जी हमेशा सतसंग में कहा करते थे कि डलहौजी में बहुत अच्छी आत्माएं हैं।

इसी तरह मैंने यहाँ सौ से भी ज्यादा लोगों को नामदान दिया है। यहाँ भी डलहौजी की तरह बहुत अच्छी आत्माएं हैं। मेरा दिल

खुश हुआ सबको बहुत अच्छे अनुभव हुए। इन प्यासी आत्माओं को पता नहीं इन्होंने कितने जन्मों में अच्छे कर्म किए थे।

किसी के प्यार का तभी पता लगता है जब वह आत्मा महात्मा के संपर्क में जाती है। इसी तरह खरे-खोटे सोने का तभी पता लगता है जब उसे पारस की कसौटी पर परखा जाता है। हमने जो सतसंग में सुना है उस पर प्रेम-प्यार से अमल करना है। आप सतसंग में अपनी हाजरी लगाते रहें, सतसंग के जरिए ही जीवन सफल होता है। सतसंग के बिना हमारे अंदर खुष्की आ जाती है।

यहाँ के प्रेमियों ने, पश्चिम के प्रेमियों ने और मुम्बई के प्रेमियों ने सेवा में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है। अगर सेवादारों से कोई गलती हो जाती है या किसी को सख्त बोला जाता है तो हम उन सबकी तरफ से माफी मांगते हैं। कोई भी प्रेमी अपने घर अभाव लेकर न जाए कि मुझे उस सेवादार ने यह बोला है।

हम आशा करते हैं कि जिन्होंने भी सेवा की है हमारे गुरुदेव परमपिता कृपाल, बाबा सावन सिंह जी महाराज सबकी सेवा लेखे लगाएंगे। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सेवा नकद सौदा है। सेवा करने से तन-मन और धन सब कुछ पवित्र हो जाता है।'' आज भंडारे का आखिरी दिन है। मैं आशा करता हूँ कि सब प्रेमी ज्यादा से ज्यादा नाम जपेंगे। आपस में प्यार और भाई चारा बनाकर रखेंगे।

***

12 जुलाई 1987

धन्य अजायब

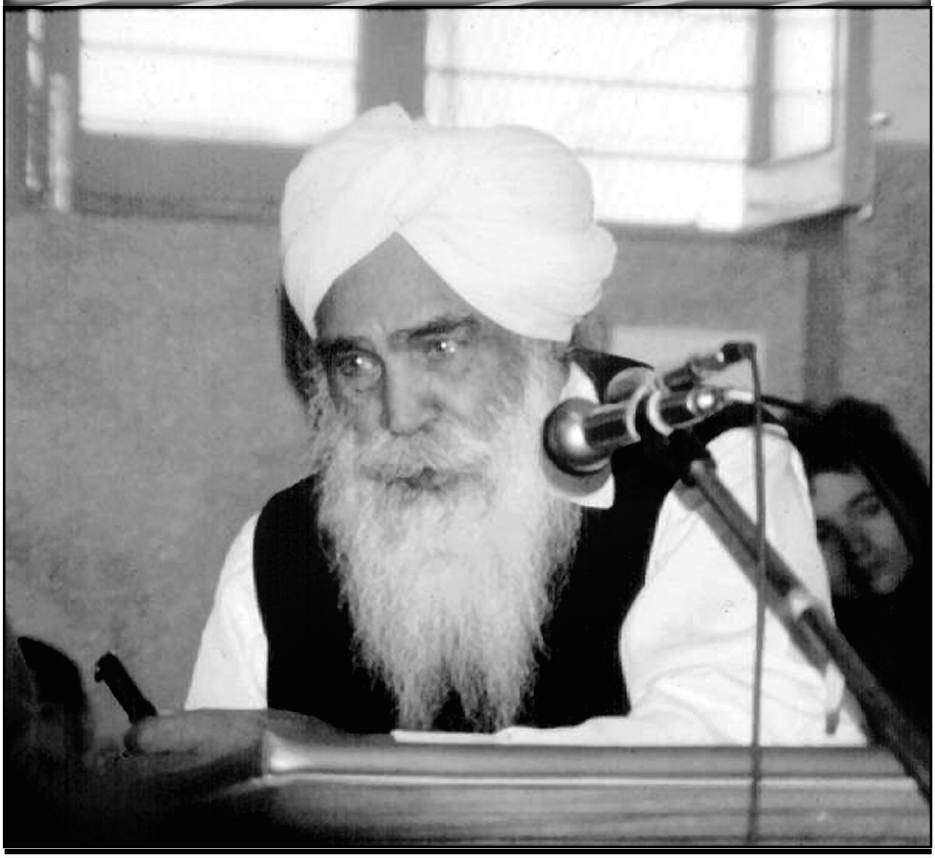

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

2 से 6 फरवरी 2016

4 से 6 मार्च 2016

31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2016